दे लंका में आग

(लम्बी तेवरी–तेवर शतक)



रमेशराज

दे लंका में आग

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-2012, मूल्य-40 रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, **ईसानगर,**
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय


रमेशराज

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

दे लंका में आग

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

रमेशराज

सिस्टम आदमखोर, ज़िन्दगी दूभर है,
कविता को हथियार बना तू लाँगुरिया।1

असुरों के आगे विनती में हर स्वर है,
क्रान्ति-भरे फिर भाव जगा तू लाँगुरिया।2

कान्हा है यदि मौन, भार अब तुझ पर है,
घटता द्रौपदि-चीर बढ़ा तू लाँगुरिया।3

सुन ले फिर पाश्चात्य-सभ्यता घर-घर है,
श्रेष्ठ सनातन मूल्य बचा तू लाँगुरिया।4

भरा हुआ दुःख से खुशियों का अन्तर है,
मन पर भारी बोझ, हटा तू लाँगुरिया।5

पापों की बुनियाद खोखली, पल-भर है,
जग को अब ये बात बता तू लाँगुरिया।6

सच है नाव-सवार, नाव जल-भीतर है,
नैया सच की पार लगा तू लाँगुरिया।7

साँस-साँस पर आज लोटता विषधर है,
दंश न मारे, बीन बजा तू लाँगुरिया।8

हर पापी के हाथ विषबुझा खंजर है,
'सच' भोला इन्सान, बचा तू लाँगुरिया।9

कहाँ छुपा काले धन वाला अजगर है
मुद्दा संसद बीच उठा तू लाँगुरिया। 10

'महिषासुर' भर रहा हृदय में फिर डर है,
माँ दुर्गे को जगा, जगा तू लाँगुरिया।।11

संसद में खर्राटे भरे मिनिस्टर है,
इसको तीखा मज़ा चखा तू लाँगुरिया।।12

क्यों जूए-सा बोझ रखा कन्धे पर है,
मत जीवन बदहाल बना तू लाँगुरिया। 13

घुड़की देता हुआ समय अब बन्दर है,
मत घुड़की पै माथ नवा तू लाँगुरिया।।14

अमरीका के पास लूट का मंतर है,
मत इसकी बातों में आ तू लाँगुरिया।।15

राम-नाम का ढोंग हृदय के भीतर है,
इस 'शबरी' के बेर न खा तू लाँगुरिया।।16

दे लंका में आग जहाँ सब बदतर है,
बन कपीश इस बार दिखा तू लाँगुरिया।17

आग आँधियों को आयी अब लेकर है,
अपने छप्पर-छान बचा तू लाँगुरिया।18

संवेदन से दूर भावना पत्थर है,
स्पंदन-हित बुद्धि लगा तू लाँगुरिया।19

अब चीज़ों का भाव पहुँच से बाहर है,
क्या पीयेगा दूध-मठा तू लाँगुरिया।20

हवस अमीरों को धन की अम्बर पर है,
अब इनको औक़ात बता तू लाँगुरिया।21

ये संसद का बजट-वसंती छल-भर है,
बनकर कोयल गीत न गा तू लाँगुरिया।22

इस निजाम को छेद, भेद ये पल-भर है,
मात-मात-दर-मात न खा तू लाँगुरिया।23

जीवन का आनंद लीक से हटकर है,
बन कोल्हू का बैल चला तू लाँगुरिया।24

हर उन्मादी लिये हाथ में खंजर है,
नफरत की दीवार गिरा तू लाँगुरिया।25

असहायों का यहाँ रुदन में हर स्वर है,
मुस्कानें बस्ती में ला तू लाँगुरिया।26

बन तू तनिक विनम्र अगर तू जलधर है,
बोल न ऐसे 'लै पप्पा' तू लाँगुरिया।27

द्रौपदि बैठी जिस जंघा के ऊपर है
क्यों न तोड़ता वो जंघा तू लाँगुरिया।28

जहाँ सरों पर छतें नहीं, बस अम्बर है,
भले झौंपड़ी बने, बना तू लाँगुरिया। 29

मुझमें-तुझमें बस इतना ही अन्तर है,
मैं माचिस, बारुद बना तू लाँगुरिया।30

बस थोड़ी ही दूर नूर जल्वागर है,
सोच जहाँ पर आज खड़ा तू लाँगुरिया।31

इस नुक्कड़-नाटक में परिवर्तन-स्वर है,
मेरे सँग में गोल बना तू लाँगुरिया32

जिसके भीतर खुशहाली का मंज़र है,
उस चिन्तन को पका, पका तू लाँगुरिया।33

जल्लादों की छुरी हमारे सर पर है,
बड़े बुरे हैं हाल, बचा तू लाँगुरिया।34

मेरी मति पर कुंठाओं का पत्थर है,
ऐसे मत आरोप लगा तू लाँगुरिया।35

उड़ी पतंगों के पीछे अब लंगर है,
कहीं न हो ये काम बता तू लाँगुरिया।36

जहाँ प्रेम का बदला-बदला-सा स्वर है,
वहाँ लगी है आग, बुझा तू लाँगुरिया।37

ये भी जीने का कोई क्या स्तर है,
कदम प्रगति की ओर बढ़ा तू लाँगुरिया।38

लेकर कच्ची चली 'सोहनी' गागर है,
नदिया भरे उफान, बचा तू लाँगुरिया।39

डाका अब की बार हमारे हक़ पर है,40
दिल्ली को यह बात बता तू लाँगुरिया।

देश लूटता धनिक, सांसद, अफसर है,
अब भारी आक्रोश जता तू लाँगुरिया।41

नदी बनी ये बता भला क्यों पोखर है,
पोखर को फिर नदी बना तू लाँगुरिया।42

अपना बल मत भूल कि तू तो नाहर है,
असुरों को दे चीर, बला तू लाँगुरिया।43

देख तुझे अँधियार काँपता थर-थर है,
लाया है इस बार प्रभा तू लाँगुरिया।44

इन्क़लाब का तू ही तो नामाबर है,
परचम सच का उठा, उठा तू लाँगुरिया।45

महँगाई का बोझ करे तन दुल्लर है,
जमाखोर को सबक सिखा तू लाँगुरिया।46

वर्षों से ये ही शोषण का मंजर है,
आग-बबूला आज हुआ तू लाँगुरिया।47

तू ही तो विष पीने वाला शंकर है,
रच दे फिर इतिहास नया तू लाँगुरिया।48

कह दे नेता देश बेचता तस्कर है,
परदा अब की बार उठा तू लाँगुरिया।49

उसने अपना नाम रखा क्या 'ईश्वर' है?50
कौन लूटता देश बता तू लाँगुरिया?

क्रान्तिकारियों साथ रही जो जलकर है,
वो ही बुझी मशाल जला तू लाँगुरिया।51

असुरों की चर्चा फिर से अधराधर है,
भय का यह माहौल मिटा तू लाँगुरिया।52

कैसे मानूँ मेरी पीर निरुत्तर है,
जाने सबका हाल, 'जगा' तू लाँगुरिया।53

मेघनाद-सा गर्जन, रावण-सा स्वर है,
धूल अधम को चटा, चटा तू लाँगुरिया।54

आज कंश का मित्र बना मुरलीधर है,
इस रिश्ते से खुश है क्या तू लाँगुरिया?55

कर में ले तलवार दूसरे खप्पर है,
लाश खलों की आज बिछा तू लाँगुरिया।56

तेरे ही काँधों पै सच की काँवर है,
चल तेजी से पाँव बढ़ा तू लाँगुरिया।57

जहाँ दलदली भूमि कीच या गोबर है,
वहाँ नहीं चादरें बिछा तू लाँगुरिया।58

जिनके सोचों बीच लफंगा-लोफर है,
कर उन बीच न बैठ सभा तू लाँगुरिया।59

फिर बम का आंतक देख पटरी पर है,
सोच-समझकर कर ट्रेन चला तू लाँगुरिया।60

कोई बोले 'अल्ला' कोई 'हर-हर' है,
बढ़ता हुआ फसाद घटा तू लाँगुरिया।61

बस थोड़ी दूरी पै अमृत-निर्झर है,
वक्ष चीर दे कुछ तम का तू लाँगुरिया।62

एक यही तो रूप सत्य है-सुन्दर है,
'भगत सिंह' बन आज दिखा तू लाँगुरिया।63

जहाँ आदमी बेहद दब्बू-कायर है,
वहाँ क्रान्ति की बाँच कथा तू लाँगुरिया।64

भले दीखती तेरी काया पंजर है,
पहले ऐसा वीर न था तू लाँगुरिया।65

छुपा हुआ झाड़ी के पीछे अजगर है,
सच को लेगा लील, भगा तू लाँगुरिया।66

सूखे हुए खेत की खातिर जलधर है,
गहरे तम में अग्नि-सिखा तू लाँगुरिया।67

तब ही नतमस्तक होगा हर अक्षर है,
भाषा को औजार बना तू लाँगुरिया।68

है रावण-दरबार तुझे किससे डर है,
अंगद जैसा पाँव जमा तू लाँगुरिया।69

तू है मौला-मस्त, विकट यायावर है,
इन्क़लाब की बहा हवा तू लाँगुरिया।70

तू नैतिक मूल्यों का सच्चा बुनकर है
ले-ले हाथों में चरखा तू लाँगुरिया।71

यह तेरा उपचार श्रेष्ठ अति हितकर है,
लगा घाव पर सही दवा तू लाँगुरिया।72

ख़ामोशी को लादे गया दिसम्बर है,
नया साल खुशहाल बना तू लाँगुरिया।73

राजनीति का कीचड़ भरा सरोवर है,
इसमें सच का कमल खिला तू लाँगुरिया।74

मुख पर कालिख पोत कुकर्मी ये नर है,
यूँ मत रंग-अबीर लगा तू लाँगुरिया।75

हर कउए की दृष्टि तेरी रोटी पर है,
लंगूरों के बीच घिरा तू लाँगुरिया।76

दाना तो क्या छूछ न आये घर पर है,
रखा रहा ऐसी मक्का तू लाँगुरिया।77

महँगाई के कारण जन-जन को ज्वर है,
जनता का संताप मिटा तू लाँगुरिया।78

जो हैं आदमखोर उन्हीं से टक्कर है,
गरेबान तक हाथ बढ़ा तू लाँगुरिया।79

वो जीतेगा जिसकी चोट निरंतर है,
वही पुराने हाथ दिखा तू लाँगुरिया।80

इतमें घोर अभाव उधर मालोजर है,
सबको एक समान बना तू लाँगुरिया।81

वही देश का शत्रु दिखे जो लीडर है,
मत इसका सम्मान करा तू लाँगुरिया।82

खिले न कोई फूल, डाल पर पतझर है,
कैसे कहूँ वसंत, बता तू लाँगुरिया?83

फिर 'गौरी' घोड़े पर आया चढ़कर है,
तान प्रत्यंचा वाण चला तू लाँगुरिया।84

सच कहने को मुँह मैंने खोला-भर है,
आगे मेरी बात बढ़ा तू लाँगुरिया।85

चापलूस औ' तुझमें भारी अन्तर है,
मत असत्य को माथ नवा तू लाँगुरिया।86

हर कोई बन गया जहाँ पर मधुकर है,
उन ग़ज़लों के गाँव न जा तू लाँगुरिया।87

तर आँखों के साथ जो निर्धन के घर है,
उस बेटी का ब्याह रचा तू लाँगुरिया।88

अरे उसे पहचान साधु जैसा स्वर है,
पहन गेरुआ वस्त्र ठगा तू लाँगुरिया।89

इस सिस्टम में पाता न्याय अनादर है,
किसका पहरेदार बना तू लाँगुरिया?90

तेरे घर में चून आज मुट्ठी-भर है,
किसको देगा इसे खिला तू लाँगुरिया।91

अँधियारा इस बार हमारा रहबर है,
ग़लत दलीलों बीच घिरा तू लाँगुरिया।92

इन्क़लाबियों की ये क्रान्ति धरोहर है,
अंगारे से राख हटा तू लाँगुरिया।93

चीजें दीखें साफ कौन नर-किन्नर है,
कर उजियारा और घना तू लाँगुरिया।94

इस युग में हर नंग दिखे परमेश्वर है,
नंगे को नंगा कह जा तू लाँगुरिया।95

चटक रंग के साथ खिला गुलमोहर है,
यूँ ही पानी-खाद लगा तू लाँगुरिया।96

जीवन तेरा फूटा हुआ कनस्तर है,
चाहे जैसे रोज बजा तू लाँगुरिया।97

क्यों ज़िन्दा नारी की देह चिता पर है,
मत चलने दे ग़लत-प्रथा तू लाँगुरिया।98

देखें हम भी तेरा अब क्या तेवर है,
अग्निमुखी चिन्तन में आ तू लाँगुरिया।99

सही चोट करने का ये ही अवसर है,
घन को भरकर जोश उठा तू लाँगुरिया।100

मेरी तेवरियों का विद्रोही-स्वर है,
इनके हर तेवर को गा तू लाँगुरिया।101

मेरी तेवरियों में पावक गोचर है,
हर तेवर को बना ऋचा तू लाँगुरिया।102

सौ से ऊपर इस तेवर का नम्बर है,
ऐसी ही तेवरी बना तू लाँगुरिया।103

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**